गुप्तकाल और स्वर्णयुग की अवधारणा

प्राचीन काल में गुप्त साम्राज्य को स्वर्ण काल के रूप में व्याख्यित किया गया है। वस्तुतः कोई भी सभ्यता स्वर्ण युग के स्तर पर पहुंच गई तब मानी जाती है, जब जीवन के विविध क्षेत्रों में एक स्तरीय विकास नजर आता है। जब हम गुप्त काल को इस कसौटी पर रखते हैं तो हमें, एक दृष्टि से गुप्त काल की चतुर्दिक समृद्धि एवं सफलता नजर आता है। गुप्त काल के स्वर्ण युग के पक्ष में निम्नलिखित बातें कही गई हैं।

प्रथम, गुप्तशासकों ने मौर्य साम्राज्य के पतन के 500 वर्षों के पश्चात साम्राज्यवाद की परम्परा को पुनः जीवित किया तथा कुषाण साम्राज्य के पतनोपरांत छोटे-छोटे राज्यों में विखरे भारत को शासन के एक सूत्र में बांधा किया। दूसरे, गुप्त काल का पूर्वार्द्ध उस व्यवसायिक समृद्धि तथा मुद्रा अर्थव्यवस्था के विकास की पराकाष्ठा को दर्शाता है जो छठी सदी ई० पू० में प्रारम्भ हुई थी। इस काल में ही सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी करने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जो इस बात का संकेतक है कि इस काल में वाणिज्य-व्यापार उन्नत अवस्था में था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा गुजरात क्षेत्र पर नियंत्रण के पश्चात व्यापार-वाणिज्य को और भी प्रोत्साहन मिला। वाणिज्य-व्यापार के साथ कृषि विकास के लिए भी यह काल उपयुक्त था क्योंकि भूमि अनुदानों के माध्यम से नये-नये क्षेत्रों में कृषि का विकास हो रहा था।

इस काल में गुप्त शासकों द्वारा धार्मिक सद्भाव की नीति से प्रोत्साहन किया गया। गुप्त शासक स्वयं वैष्णव थे, किन्तु उन्होंने अन्य पंथों के साथ धार्मिक सद्भाव की नीति बनाए रखी। उदाहरण के लिए चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का मंत्री वीरसेन शैव धर्म को मानने वाला था तो उसका सुरक्षा सेनापति अम्रकार्दव बौद्ध था। गुप्तों के अन्तर्गत ही भारतीय के धार्मिक स्वरूप का निर्माण हुआ था।

साहित्य एवं कला की दृष्टि से इस युग को क्लासिकल युग माना जाता है। अर्थात साहित्य और कला के मानदण्ड धारण

Scanned with CamScanner

किए जिन्होंने परवर्ती काल के मॉडल को भी प्रभावित करना प्रारंभ किया। कालीदास, विशाखदत्त एवं अमरसिंह की रचनाएं इस काल की विशिष्ट ~~उपलब्धियां~~ उपलब्धियां हैं। फिर इसी काल में वत्सभट्टी और हरीसेना जैसे महान कवि भी हुए। इसी प्रकार देवगढ़, अजंता और भीतरगांव की मंदिर, अजंता तथा बाघ ~~की~~ के अंकित गुफा चित्र तथा उदयगीरी गुहा मंदिर गुप्तकाल की विशिष्ट कलात्मक उपलब्धियां हैं। इस काल में स्थापत्य के क्षेत्र में नागर शैली का आधार निर्मित हुआ।

गणित एवं खगोल के क्षेत्र में आर्यभट्ट एवं ~~वराहमीही~~ वराहमिहीर की उपलब्धियां स्मरणीय है। इस काल में धातु कला का भी बेहतर विकास दिखता है। दिल्ली स्थित महरौली लौह स्तम्भ उन्नत धातु कला का उदाहरण है। चिकित्सा के क्षेत्र में धनवंतरी जैसे विद्वानों का उदय इसी काल में देखा जा सकता हैं।

परन्तु विश्लेषण करने पर इस काल की सीमाएं स्पष्ट हो जाती है। जैसा की हम जानते हैं कि प्राचीन काल में सबसे विशाल साम्राज्य मौर्यों का था न कि गुप्तों का, साथ ही गुप्तों के वास्तविक नियंत्रण भी काफी छोटे हिस्से पर था अधिकतर हीस्से पर उसके अधिनस्थ शासक शासन कर रहे थे। यह वही काल था जब राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में सामंती संबंधों का आधार निर्मित हुआ। प्रशासनिक क्षेत्र में वंशानुगत तत्वों की प्रधानता बढ़ी। कृषि अर्थव्यवस्था में सामंती संबंधों की शुरुआत हुई। भूमि अनुदान के कारण केन्द्रीय शक्ति का ह्रास हुआ।

गुप्त काल का उत्तरार्द्ध को आर्थिक क्षेत्र में अवनति के काल के रूप में देखा जा सकता है। क्योंकि एक तरफ जहां बिजेन्टियन साम्राज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्धों में

बाधा आयी, वहीं दूसरी तरफ व्यापार का सामंतीकरण होने लगा। कृषि अर्थव्यवस्था में विकास के बावजूद भी कृषकों की दशा अच्छी नहीं हो सकी, क्योंकि सामंतीकरण के कारण अर्थव्यवस्था के रक्षक समूह द्वारा अधिशेष के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लिया गया। वाणिज्य व्यापार के पतन के परिणाम स्वरूप मुद्रा अर्थव्यवस्था और नगरीय संरचना को धक्का लगा।

इस काल में महिलाओं की सामाजिक दशा में गिरावट आयी। महिलाओं को संपत्ति के दर्जे में रखा गया और यह मान लिया गया कि उन्हें हमेशा पुरुषों के संरक्षण में रहना चाहिए, लेकिन दूसरी ओर कला और साहित्य में कई काव्य रूप से उनका चित्रण किया गया।

सामाजिक स्तर पर समग्र रूप से अछूतों को और भी हेय दृष्टि से देखा जाने लगा था। फाहियान ने भी चाण्डालों की दुर्दशा का जिक्र किया है। सामाजिक तनाव जारी रहे। वर्ण-विभक्त समाज को कायम रखने के लिए रक्षक हथियार के रूप में धर्म का उपयोग किया जाने लगा। जातिवादी कट्टरता और जाति भेद पहले से और अधिक तीव्र हो गए तथा कानून एवं न्याय के माध्यम से उच्च वर्ग के हितों की रक्षा की जाने लगी।

इस काल में साहित्य एवं कला का विकास देखने को मिलता है, लेकिन गौर से देखने पर उनकी सीमाएँ भी स्पष्ट हो जाती है। समकालीन कला एवं साहित्य में उच्च वर्ग की समृद्धि तो व्यक्त होती है, किन्तु जनसामान्य के पीड़ाओं का अंकन नहीं दिखता। अर्थात अजन्ता, भीतरगांव, देवगढ़ के उपलब्धियों के पीछे जितने हुए लोग थें, जिनके गीत गाने वाला कोई हरिसेण, वत्सभट्टी नहीं था।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि गुप्त काल वह काल था जहां विविध क्षेत्रों में नई उपलब्धियां दिखती है, परन्तु उपलब्धियों के साथ इनकी सीमाएं भी स्पष्ट हैं। अतः स्वर्ण युग की अवधारणा मिथक ही प्रतीत होती है। वस्तुतः स्वर्ण युग जैसा शब्द विद्वान इतिहासकारों के उस समूह के, जो राष्ट्रीय आंदोलन की उपज थे, जिन्हें साम्राज्यवादी इतिहास लेखन का सामना करना पड़ा था। वस्तुतः जनता का वास्तविक स्वर्ण युग अतीत के गर्भ में नहीं बल्कि भविष्य के गर्भ में निहित है।

Scanned with CamScanner